(4) Dr. Sangita Aher (Hindi)

Impact Factor 6.261 ISSN- 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Multidiciplinary international E-research journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

Vol (I)

12 January 2019 Special Issue – 68

महिला सबलीकरणाच्या समस्या & आव्हाने आणि उपाय

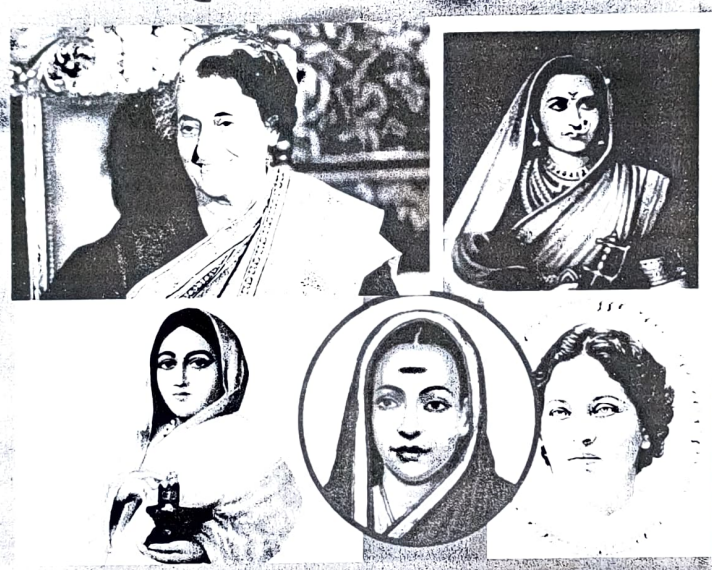

Chief Editor
Dr. Dhanraj T. Dhangar
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce college,
Yeola, Dist. Nashik (M.s.) India

Executive Editor of This Issue
Prof. A.R. Bhosle
Assist. Prof. Head of Dept. Sociology
Vasant Mahavidalaya , Kaij, Dist. Beed

Dr. S.K. Gaike
Assist. Prof. Dept. of Sociology
Vasant Mahavidalaya , Kaij, Dist. Beed

SWATIDHAN PUBLICATION
Visit to - www.researchjourney.net

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal | ISSN- 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) –0.676 | January 2019 | UGC Approved No. 40705
Special Issue -92 , महिला सबलीकरणच्या समस्या : आव्हाने आणि उपाय

Index

1.	Empowerment Of Women – Through Domestic Violence Act, 2005	Prof. Ingle Veena Manoj	7
2.	Social and Domestic Violence:The Major Problem of Women Empowermentin India	Dr. Chandrashekhar I. Gitte	10
3.	Study Of Superstitious Attitude And Mental Health Of EmployedAnganwadi Workers Homemakers	Prof. Shubhangi Satone	15
4.	Gender Inequity and Brutality in Bama's *Sangati*	Mr. Gangadhar V. Shinde	19
5.	Value System And Gandhian Thought	Dr.Vijay Tunte	21
6.	Gender inequality and women	Dr Ranee Jagannathrao Jadhav	25
7.	Mock-up of Feminine Vanquishing in Manujla Padmanabhan's*Lights Out*	Sarang Gajanan Haribhau	29
8.	Pioneers of Feminist Movement.	Dr Mhamane Vijay Nagnath	32
9.	Dimensions of women Empowerment in India	Thombre M. Dattatraya , Dr.D.S.Chavan Dr.N.B.Kadam	34 36
10.	Domestic Violence **in** Dowery Death In India	Dr Rajpalsingh S. Chikhalikar	39
11.	Dalit Feminist Perspective: Articulation of Unspoken Voices in Dalit Women Writings	Dr.kamble chandrakant	41
12.	Women Empowerment : A Sociological Approach	Dr. Bhagyashree S Gawate	44
13.	Man and Woman Relationship in Anita Desai's selected Novels	Sawant S.G.	47
14.	Women's Safety in INDIA	Dr. Raut Sunil Raosaheb	49
15.	Women and Violence: Do they have legal Rights?	Prof. Dr. H.R. Jawalge	51
16.	The Role of Education & literature in Women empowerment	Rupasi Das	53
17.	Tourism: - A Vehicle For Promoting Gender Equality & Women Empowerment	Dr. Milind Y.Mane	56
18.	Women and Globalization: An Overview	Dr. Sheikh R. R.	58
19.	Scientific Revolution and Wome	Mr. Bhagwan S. Manal,	60
20.	Gender Inequality:Women's Empowerment & it's Facts of Women's Health&Nutrition, Educational Performance & Economic Status		
21.	कौटुंबिक हिंसाचार प्रतिबंध कायदा २००५ आणि स्त्रिया	डॉ. सोंडगे ता.प.	64
22.	महिला चळवळ आणि स्त्रिया	प्रा.डॉ. बिरादार प्रतिभा रंगराव	67
23.	महिला सबलीकरण संकल्पनात्मक चौकट	डॉ.सुधीर आ. येवले	69
24.	हुंडा प्रथा, समाज आणि स्त्रिया	डॉ. व्हि. व्हि. जाधव	72
25.	जागतिकीकरण आणि स्त्रिया	डॉ. दिलीप सिताराम मस्के	74
26.	कौटुंबिक हिंसाचार आणि स्त्रिया : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास	प्रा. प्रदीप दाजीबा पाटील	76
27.	नारी के स्वतंत्र और मौलिक व्यक्तित्व की तलाश 'आपका बंटी'	प्रा. डॉ. आहेर संगिता एकनाथराव	79
28.	स्त्रियांचे मानवअधिकार : वास्तव की मिथ्या	प्रा. गीता एस. गिरवलकर	81
29.	जागतिकीकरण आणि स्त्रिया	प्रा.गोरे अशोक रामचंद्र	83
30.	महिला सक्षमीकरण आव्हाने आणि उपाय	प्रा. डॉ. घायाळ एस. पी.	85
31.	सामाजिक सुधारणेच्या चळवळी आणि स्त्रीया	प्रा.डॉ. बानायत गांधी	87
32.	महिला सुरक्षा विषयक कायदयाचा अभ्यास	प्रा. पोपळघट आर. एस.	89
33.	लिंगभाव विषमता आणि स्त्रिया	प्रा. डॉ. श्रीकांत गायकवाड	92
34.	कौटुंबिक हिंसाचार आणि स्त्रिया	डॉ. सुनिल जाधव , प्रा.भोसले ए.आर.	95
35.	हुंडा प्रथा समाज आणि स्त्रिया	प्रा.भैयासाहेब धोंडिबा मसुरे	97

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal | ISSN- 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) –0.676 | January 2019 | UGC Approved No. 40705
Special Issue -92 , महिला सबलीकरणच्या समस्या : आव्हाने आणि उपाय

नारी के स्वतंत्र और मौलिक व्यक्तित्व की तलाश 'आपका बंटी'

प्रा. डॉ. आहेर संगिता एकनाथराव
महिला महाविद्यालय, गेवराई।

साहित्य में नारी का हर युग में चित्रण हुआ है। साहित्य समाज का दर्पण होता है इसीलिए समाज की खूबियाँ और समस्याओं का अंकन उसमें होता है। आधुनिक युग में स्त्री-मुक्ति के व्यापक प्रयास किये गये और इसमें साहित्य का बहुत बड़ा योगदान रहा है। वैश्वीकरण के दौर में विकास के दरवाजे खुले हैं फिर भी स्त्री समस्याओं के कुछ अहम् सवाल पैदा होते हैं। आधुनिक स्त्री की स्थिति में परिवर्तन जरूर हो रहा है परन्तु उसकी समस्याएँ और संघर्ष आज भी जारी है।
आधुनिक स्त्री चूल्हा-चौकी से बाहर निकलकर विभिन्न क्षेत्रों में मुक्त प्रवेश कर रही है। विभिन्न कार्यक्षेत्रों में पुरूषों के साथ कदम मिलाकर अपनी योग्यता सिध्द कर रही है। आत्मविश्वास और आर्थिक निर्भरता से उसने अपनी सामाजिक पहचान बनायी है। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता ने उसकी परतंत्रता और हीनता को जड़ से दूर किया है। परिणामस्वरूप आज उसे परिवार और समाज में भी सम्मान और बराबरी का दर्जा मिलने लगा है। "आज सामान्यतया परिवारों में आज शिक्षित महिलाओं को न तो किसी प्रकार से शोषित किया जा सकता है और न ही उन्हें आज अपने अधिकारों का बलिदान करने की आवश्यकता रही है।[1]"

समकालीन महिला कथाकरों में मन्नू भंडारी ऐसी लेखिका है जिन्होंने नारी का विभिन्न पारिवारिक रिश्तों और सामाजिक संदर्भों में अंकन किया है। मन्नू जी एक श्रेष्ठ उपन्यासकार है। इनके उपन्यास नारी प्रधानता के साथ भारतीय परिवेश एवं आधुनिकता को लिए आगे बढ़ते हैं। मन्नू भंडारी स्वातंत्र्योत्तर काल की बहुचर्चित महिला कथाकार है। नारी जीवन के मूक क्षणों को वाणी देने का काम मन्नूजी ने अपने साहित्य से किया है। उनका 'आपका बंटी'उपन्यास बहुत ही चर्चित उपन्यास रहा है, जो दूरदर्शन पर भी प्रसारित हो चुका है। इसमें व्यक्ति के अन्तर्जगत की बारीकियो की परतें अत्यन्त कुशलतापूर्वक खोली गयी है। आर्थिक स्वतंत्रता के कारण नारी अपने आत्मसम्मान के लिए अधिक सजग है एवं निजी अस्तित्वबोध उसमें प्रबल हो चुका है। "मन्नू भंडारी का सम्पूर्ण साहित्य, चाहे कहानी हो, उपन्यास हो या नाटक हो, सभी की विशेषता यह है कि इनमें कामकाजी नारियों की हो समस्याएँ चित्रित हैं। कामकाजी नारियों का दुःख, उनकी घुटन, कुण्ठाएँ, उनकी सामाजिक अवस्था, उनकी मजबूरी-विवशता, उनका मानसिक संघर्ष, यह सब मन्नूजी के कथा-साहित्य के विषय बन गये है।"[2]

साहित्यिक स्तर पर 'आपका बंटी' उपन्यास अत्यन्त सफल रहा है। इस उपन्यास की नायिका शकुन को निजी अस्तित्व बोध के प्रति अत्याधिक सजग दिखाया है। यह अस्तित्व बोध ही उसमें स्वाभिमान जगाता है। क्योंकि शकुन का पति अजय अत्यन्त क्रोधी और पुरूषी दंभ भरनेवाला है जो अपनी पत्नी को अपने अधीन रखना चाहता है। शकुन इस मानसिक यातना से मुक्त होना चाहती है। लेखिका लिखती है, "शकुन चक्की पीस-पीसकर बेटे का जीवन बनाने में अपने आपको स्वाहा कर देनेवाली माँ नहीं थी, बल्कि स्वातंत्र्य व्यक्तित्व, आकांक्षाएँ और आजीविका के साधनों से दृप्त माँ थी।"[3]
श ाकुन स्वयं एक महाविद्यालय की प्रिंसिपल थी। व्यक्ति स्वतंत्रता की चेतना उसमें कही न कही थी। खुद आत्मनिर्भर होते हुए चुपचाप अन्याय को सहना उसके स्वाभिमान को ठेंस पहुँचाता था। शुरू में शकुन हर स्थिति को स्वीकारती और सहती रहती हे, परन्तु खुद की एक पहचान होते हुए भी अजय के अधीन रहकर घुट-घुटकर जीना उसे बेचैन कर देता है। उसके मन में हमेंशा अंतः संघर्ष उमड़ता रहता है। "क्या खुद उसे अजय का संबंध भारी नही पड़ने लगा था? क्या वह खुद भी उससे मुक्त नही होना चाहती थी? तो फिर? कैसा है यह दंश? क्या यह आज तक अजय से कुछ अपेक्षा रखती आई है?[4] उसके मन में अनगिनत प्रश्न तैरते रहते है। उसके जीवन का एक अध्याय या जो समाप्त हो चुका था, परन्तु संघर्ष और समस्याएँ खत्म नही होती है।
शकुन के मन में अहं की भावना बलवती होती है। वह अपने पति को पराजित करने के साधन जुटाती रहती है। और अन्ततः तलाक हो जाता है। परन्तु तलाक के बावजुद भी शकुन स्वस्थ नही रह पाती है। उसे पति के पूर्व अधिकार का मानसिक दबाव आतंकित करता रहता है। बीती बात को चाहकर भी भूल नहीं पाती है। "सारी जिंदगी अजय शकुन को, शकुन के हर काम और बात को, उसके सोचने और उसके रवैये को गलत ही तो सिध्द करता रहा है। शकुन बहुत डॉमिनेंटिंग है, शकुन यह है, शकुन वह है...पता नही गलत कौन था? वह या अजय... जो भी हो, पर सात साल तक गलत होने के अपराध बोध को उसने किसी न किसी स्तर पर हर दिन झेला है।"[5]

वैवाहिक जीवन की असफलता शकुन को पुरूष के प्रति अविश्वास के भाव से भर देती है। स्वयं इस मानसिक यंत्रणा से छुटकारा पाने की पूरी तरह से भूलकर अपने भविष्य को मनचाहे रूप में सँवारने की अपेक्षा वह रखती है। इसीलिए डॉ. जोशी को नये जीवनसाथी के रूप में स्वीकार कर अपनी नयी जिन्दगी शुरू करती है। व्यक्तित्व विकास में बाधक तत्वों की परख करती हुई उसकी अस्मिता की तलाश को शकुन महत्व देती है। इसीलिए शकुन का यह निर्णय नारीवाद को बढ़ावा जरूर देता है परन्तु उसका अपना बेटा बंटी इससे इतना आहत हो जाता है कि वह डॉक्टर साहब को अपने पिता के रूप में देख नही पाता।

शकुन और अजय के बीच की लड़ाई, विरोधी स्थितियाँ, तणाव और अहं के कारण बंटी की भावनाओं के साथ खिलवाड़ होता है। इन दोनो के बीच मे बंटी पीसता जाता है। शकुन हर तरह से उसे खुश रखने की कोशिश करती है। क्योंकि वही उसके जीवन की सार्थकता थी। और इसी वजह से वह कभी नही चाहती थी कि बंटी एक क्षण के लिए भी उसकी आँखो से ओझल हो। शकुन के जीवन की उथल-पुथल और एक अजीब-सी कशमकश में बंटी की कोमल भावनाओं को ठेस पहुँचती है। अपने अहं संभालते हुए बंटी की नजर से कभी सोचा ही नही इस बात का अफसोस शकुन को होता है। "सच, हम लोग शायद बंटी को मात्र एक साधन ही समझते रहे! अपने-अपने अहं, अपनी-अपनी महत्त्वाकांक्षाओं और अपनी-अपनी कुंठाओं के संदर्भ में ही सोचते रही। बंटी के संदर्भ में कभी सोचा ही नही।"[6]

अहं जब स्वाभिमान तक सीमित रहता है तब तक ठीक है, लेकिन जब वह अत्याधिक विकसित होता है तब घातक सिध्द होता है। क्योंकि अजय को हराने के चक्कर में न चाहते हुए भी शकुन से बंटी पर आघात होता है। बंटी की मानसिक उथल-पुथल से वह स्वयं आहत होती है। "शकुन का अहं भाव ही वस्तुतः उसके जीवन हेतु अभिशाप सिध्द हुआ है एवम उसके दाम्पत्य जीवन के बिखराव का कारण बना।"[7]

यहाँ पर शकुन का अहं, सामाजिक परिवेश और विषमताओं के बीच टूटना इन स्थितियों का सूक्ष्म और यथार्थ चित्रण किया है। मन्नू भंडारी की श्रेष्ठतम कृति 'आपका बंटी' उन्हें श्रेष्ठ उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठा प्रदान करता है। स्त्री-पुरूष सम्बन्धो की और देखने की आधुनिक दृष्टि इसे संपूर्णता प्रदान करती है। 'आपका बंटी' यह उपन्यास आधुनिक शिक्षित और आत्मनिर्भर नारी के अन्तर्दन्द को सटिकता से प्रकट करता है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखिकाने नारी के स्वतंत्र और मौलिक व्यक्तित्व की तलाश की है।

संदर्भ-सूची :

अ.क्र.	रचनाकार	रचना	पृ.सं.
1)	कमलेश्वरकुमार गुप्ता	महिला सबलीकरण	5
2)	डॉ. चम्पासिंह	मन्नू भंडारी का कथा साहित्य	93
3)	मन्नू भंडारी	आपका बंटी	7
4)	वही	वही	29
5)	वही	वही	82
6)	वही	वही	136
7)	डॉ. सौ. मेहर दत्ता पाथरीकर	साठोत्तरी हिंदी महिला कथालेखन मे आधुनिकता बोध-	23